2 नदियों के संगम पर बसा बैकुंठधाम, महाकाल के दर्शन के लिए उमड़ी भीड़

विषय सूची (Table of Contents):

>> कोडरमा का दोमुहानी बैकुंठधाम प्राकृतिक सौंदर्य और अटूट आस्था का अद्भुत केंद्र...
>> उज्जैन के महाकाल की तर्ज पर स्थापित, जहां उमड़ता है श्रद्धालुओं का सैलाब...
>> प्रमुख अवसरों पर उमड़ती है भारी भीड़...
>> झारखंड सरकार द्वारा पर्यटन स्थल घोषित, तेजी से विकसित हो रही हैं आधारभूत सुविधाएं...
>> पर्यटन विकास के मुख्य बिंदु...
>> सावन मास में गूंजता है अखंड कीर्तन और बोल बम के जयकारों का अद्भुत नाद...
>> अखंड कीर्तन और आध्यात्मिक माहौल...
>> भव्य कांवड़ पदयात्रा डिग्री कॉलेज से बैकुंठधाम तक उमड़ती है शिव भक्तों की भीड़...
>> कांवड़ यात्रा की भव्य तैयारियां...
>> निसंतान दंपतियों की मन्नतें होती है पूरी, 60 दिनों तक चलता है विशेष अनुष्ठान...
>> मंदिर परिसर के अन्य देवी-देवता...
>> वर्ष 1972 की एक छोटी सी झोपड़ी से 10 एकड़ के भव्य धार्मिक परिसर तक का सफर...
>> विकास की ऐतिहासिक यात्रा...
>> निष्कर्ष...
>> अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQs)...

कोडरमा का दोमुहानी बैकुंठधाम: प्राकृतिक सौंदर्य और अटूट आस्था

झारखंड के कोडरमा जिले के चंदवारा प्रखंड के पूतो स्थित दोमुहानी बैकुंठधाम शिव मंदिर इन दिनों अपनी अद्वितीय सुंदरता और गहरी धार्मिक मान्यता के कारण आकर्षण का मुख्य केंद्र बना हुआ है। दो स्थानीय नदियों के पवित्र संगम पर स्थित यह स्थल झारखंड के प्रमुख धार्मिक और पर्यटन मानचित्र पर तेजी से उभर रहा है। यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं को न केवल मानसिक शांति मिलती है, बल्कि प्राकृतिक नज़ारे भी मंत्रमुग्ध कर देते हैं। इस स्थान का आध्यात्मिक वातावरण हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करता है।

उज्जैन के महाकाल की तर्ज पर स्थापित, जहां उमड़ता है श्रद्धाल

बैकुंठधाम की सबसे बड़ी विशेषता यहाँ स्थापित महाकाल स्वरूप शिवलिंग है, जिसे मध्य प्रदेश के उज्जैन स्थित प्रसिद्ध महाकाल मंदिर की तर्ज पर स्थापित किया गया है। यहाँ का विशाल और भव्य मंदिर परिसर तथा आसपास का प्राकृतिक परिवेश भक्तों को एक अलौकिक

अनुभव कराता है।

विशेष अवसरों पर यहाँ भारी भीड़ देखने को मिलती है। इस संबंध में अधिक जानकारी के लिए आपUP Police Constable Syllabus 2026लिंक देख सकते हैं।

प्रमुख अवसरों पर उमड़ती है भारी भीड़

सावन माह, महाशिवरात्रि और कार्तिक पूर्णिमा के पावन अवसरों पर यहाँ श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है। झारखंड के अलावा बिहार और पश्चिम बंगाल से भी बड़ी संख्या में भक्त यहाँ पहुँचते हैं।

दोमुहानी संगम में पवित्र स्नान करने के बाद श्रद्धालु भगवान भोलेनाथ का जलाभिषेक करते हैं। स्थानीय लोगों का अटूट विश्वास है कि यहाँ सच्चे मन से प्रार्थना करने वाले हर भक्त की मनोकामना पूरी होती है।

झारखंड सरकार द्वारा पर्यटन स्थल घोषित, तेजी से विकसित हो रही

राज्य सरकार द्वारा दोमुहानी बैकुंठधाम को आधिकारिक तौर पर जिलास्तरीय पर्यटन स्थल घोषित किए जाने के बाद से यहाँ विकास कार्यों में तेजी आई है। बुनियादी ढांचे के मजबूत होने से यात्रियों को काफी सुविधा मिल रही है।

पर्यटन विकास के मुख्य बिंदु

>> सड़क संपर्क:मंदिर तक पहुँचने के लिए सड़कों का सुदृढ़ीकरण किया गया है।

>> प्रकाश व्यवस्था:पूरे परिसर में आधुनिक लाइटिंग और प्रकाश की पुख्ता व्यवस्था की गई है।

>> यात्री सुविधाएं:दूर-दराज से आने वाले श्रद्धालुओं के ठहरने के लिए विश्राम गृह और अन्य सुविधाएं बढ़ाई गई हैं।

>> त्वरित प्रगति:पिछले दो वर्षों में इस धार्मिक क्षेत्र में पर्यटकों की संख्या में कई गुना वृद्धि दर्ज की गई है।

सावन मास में गूंजता है अखंड कीर्तन और बोल बम के जयकारों का अ

सावन के पवित्र महीने में पूरा बैकुंठधाम क्षेत्र भक्ति के रंग में सराबोर नजर आता है। यहाँ आने वाले खेल और वैश्विक आयोजनों की तर्ज पर ही उत्सव का माहौल रहता है, जिसके बारे में आपफीफा वर्ल्ड कप 2026 का पूरा शेड्यूलविवरण में देख सकते हैं।

अखंड कीर्तन और आध्यात्मिक माहौल

सावन माह के दौरान मंदिर परिसर में निरंतर अखंड कीर्तन चलता रहता है, जिसकी गूंज दूर-दूर तक सुनाई देती है। सावन पूर्णिमा के दिन एक विशाल भंडारे के आयोजन के साथ इस आध्यात्मिक अनुष्ठान का समापन किया जाता है। बोल बम और हर-हर महादेव के जयकारों से पूरा वातावरण गूंजायमान रहता है।

भव्य कांवड़ पदयात्रा: डिग्री कॉलेज से बैकुंठधाम तक उमड़ती है

सावन की दूसरी सोमवारी के अवसर पर डिग्री कॉलेज से लेकर बैकुंठधाम तक एक भव्य कांवड़ पदयात्रा निकालने की परंपरा पिछले कुछ वर्षों से चली आ रही है। इस यात्रा में हजारों की संख्या में शिव भक्त भगवा वस्त्र धारण कर शामिल होते हैं।

कांवड़ यात्रा की भव्य तैयारियां

इस वर्ष भी इस विशाल कांवड़ यात्रा की तैयारियां अंतिम चरण में हैं, जिसमें प्रशासनिक और स्थानीय स्तर पर सुरक्षा व सुविधाओं का पूरा ध्यान रखा जा रहा है। इस यात्रा का उद्देश्य युवाओं में सनातन संस्कृति और भगवान शिव के प्रति अटूट प्रेम को बढ़ावा देना है।

निसंतान दंपतियों की मन्नतें होती हैं पूरी, 60 दिनों तक चलता

इस पवित्र मंदिर से कई गहरी मान्यताएं जुड़ी हुई हैं। ऐसा विश्वास किया जाता है कि संतान सुख की कामना लेकर आने वाले निसंतान दंपती यहाँ लगातार 60 दिनों तक भजन-कीर्तन और विशेष आराधना करते हैं।

मंदिर परिसर के अन्य देवी-देवता

इस भव्य मंदिर परिसर में केवल भगवान शिव ही नहीं, बल्कि माता पार्वती, माँ चामुंडा, माँ कालिका, माँ संतोषी, भगवान श्रीराम, माता सीता और माँ दुर्गा सहित कई अन्य देवी-देवताओं की सुंदर प्रतिमाएं भी स्थापित हैं। मुख्य पुजारी सुधेश्वर प्रजापति लंबे समय से केवल फलाहार ग्रहण करते हुए प्रतिदिन विधि-विधान से पूजा संपन्न कराते आ रहे हैं। इस अनोखी प्राकृतिक सुंदरता के रहस्यों को समझने के लिए आपनॉर्वे का रहस्यलेख भी पढ़ सकते हैं।

वर्ष 1972 की एक छोटी सी झोपड़ी से 10 एकड़ के भव्य धार्मिक पर

दोमुहानी बैकुंठधाम का इतिहास काफी संघर्षपूर्ण और प्रेरणादायक रहा है। वर्ष 1972 में झरिया देवी ने यहाँ कलश स्थापित कर इस पवित्र स्थल का चयन किया था।

विकास की ऐतिहासिक यात्रा

शुरुआत में रेवल कुम्हार और भागू यादव के सहयोगात्मक प्रयासों से एक साधारण झोपड़ीनुमा मंदिर में पूजा-पाठ की शुरुआत हुई थी। वक्त के साथ जैसे-जैसे श्रद्धालुओं का विश्वास बढ़ता गया, वैसे-वैसे इसका कायाकल्प होता गया। आज यह मंदिर लगभग 10 एकड़ के विशाल और भव्य परिसर में तब्दील हो चुका है, जो झारखंड की सांस्कृतिक और धार्मिक धरोहर का एक प्रमुख प्रतीक बन गया है।

निष्कर्ष

कोडरमा जिले का दोमुहानी बैकुंठधाम आज केवल एक पूजा स्थल नहीं, बल्कि आस्था, प्राकृतिक सौंदर्य और सांस्कृतिक एकता का एक अनूठा संगम बन चुका है। सरकार के प्रयासों और स्थानीय लोगों के सहयोग से यह स्थल धार्मिक पर्यटन के क्षेत्र में लगातार नई ऊंचाइयां छू रहा है। यदि आप भी आध्यात्मिक शांति और प्राकृतिक छटा का एक साथ आनंद लेना चाहते हैं, तो बैकुंठधाम की यात्रा अवश्य करें।

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQs)

यह मंदिर झारखंड के कोडरमा जिले के चंदवारा प्रखंड के पूतो गाँव में दो स्थानीय नदियों के संगम के पास स्थित है।

यहाँ स्थापित महाकाल स्वरूप शिवलिंग को उज्जैन के प्रसिद्ध महाकाल मंदिर की तर्ज पर स्थापित किया गया है।

इसकी शुरुआत वर्ष 1972 में झरिया देवी द्वारा कलश स्थापना और एक छोटी सी झोपड़ीनुमा संरचना से हुई थी।

झारखंड सरकार द्वारा दोमुहानी बैकुंठधाम को एक आधिकारिक जिलास्तरीय पर्यटन स्थल घोषित किया गया है।

पूरे सावन माह यहाँ निरंतर अखंड कीर्तन का आयोजन होता है, जिसका समापन सावन पूर्णिमा के दिन विशाल भंडारे से होता है।

सावन की दूसरी सोमवारी पर डिग्री कॉलेज से बैकुंठधाम तक भव्य कांवड़ पदयात्रा निकाली जाती है।

संतान सुख की प्राप्ति के लिए निसंतान दंपती मंदिर परिसर में 60 दिनों तक लगातार भजन-कीर्तन और विशेष आराधना करते हैं।

समय के साथ हुए विकास के बाद अब यह मंदिर लगभग 10 एकड़ के विशाल परिसर में फैला हुआ है।

मंदिर के मुख्य पुजारी सुधेश्वर प्रजापति हैं, जो वर्षों से केवल फलाहार रहकर दैनिक पूजा-अर्चना संपन्न कराते हैं।

झारखंड के अलावा बिहार और पश्चिम बंगाल से भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु यहाँ आशीर्वाद लेने आते हैं।

यहाँ माँ पार्वती, चामुंडा, कालिका, संतोषी, भगवान श्रीराम, सीता जी और माँ दुर्गा की प्रतिमाएं स्थापित हैं।

सड़क निर्माण, प्रकाश व्यवस्था और यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक आधारभूत सुविधाओं का तेजी से विकास हुआ है।